मनसा सेवा - 99

अव्यक्त बापदादा :- (31.12.2007)

➳ _ ➳ **अभी यह विशेष ध्यान में रखना कि मुझे ज्ञान से, वाचा से तो सेवा करते ही रहते हो और करते ही रहना है, छोड़ना नहीं है लेकिन अभी मन्सा और कर्म, मन्सा द्वारा वायब्रेशन फैलाओ। सकाश फैलाओ।** वायब्रेशन वा सकाश दूर बैठे भी पहुंचा सकते हो। शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा किसी भी आत्मा को मन्सा सेवा द्वारा वायब्रेशन वा सकाश दे सकते हो। तो अभी मन्सा शक्तियों का वायब्रेशन, शक्तियों द्वारा सकाश और कर्म द्वारा गुण का सहयोग वा अज्ञानी आत्माओं को गुणदान दो।

➢➢ वाचा सेवा के साथ-साथ मनसा और कर्मणा सेवा करना है

➳ _ ➳ वायब्रेशन वा सकाश दूर बैठे भी पहुंचा सकते हो, शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा

➳ _ ➳ **शक्तियों द्वारा सकाश, कर्म द्वारा ब्राह्मण आत्माओं को गुणों का सहयोग, अज्ञानी आत्माओं को गुणदान दो**

→ एक मनसा सेवा, दूसरा वाचा सेवा, तीसरा कर्मणा सेवा

- मनसा द्वारा शक्तियां, वाचा द्वारा ज्ञान, कर्म द्वारा गुण फैलाना

➢➢ मनसा से शक्तियां फैलाना

➳ _ ➳ कौन सा मन शक्तियां फैला सकता है ?

→ **जो मन स्वयं ही शक्तिशाली है..**

→ पावरफुल है

→ स्वच्छ है

→ व्यर्थ से मुक्त है

→ Stable है

- मन को शक्तिशाली बनाना ताकि यह मन शक्तियां फैला सके.. आत्माएं कमजोर, शक्तिहीन, हिम्मतहीन हैं.
- आत्माएं देखना चाहती हैं, अनुभव करना चाहती हैं, क्योंकि उन्हें ज्ञान सब पता है
  - **परन्तु इस ज्ञान मार्ग में चलने के लिए पॉवर चाहिए..वो नहीं है**
  - **ब्रह्मचर्य धारण करने के लिए पॉवर चाहिए**
  - धारणाओं को धारण करने के लिए शक्ति चाहिए
  - **ज्ञान सुन लेते हैं, समझ लेते हैं, बौद्धिक तल पर, तार्किक तल पर पता है ये सत्य है परन्तु धारणा के लिए पॉवर चाहिए..**

➳ _ ➳ **अमृतवेले आत्माओं को इमर्ज करके उनको शक्तियां देनी है..**

→ पहले अपने मन को शक्तिशाली बनाना है

→ मन का स्वभाव है की छोटी-छोटी बातों में भटकता है

- **उस असीम को पाना है तो असीम होना होगा**
- **उस बेहद तक पहुंचना है तो बुद्धि को बेहद में ले जाना पड़ेगा**
- **छोटी-छोटी चीजों में फंसी हुई बुद्धि, फंसा हुआ मन कभी भी ये सेवा नहीं कर सकता**

▶ **बाबा को पावरफुल मनसा सेवाधारियों की आवश्यकता है, स्थूल सेवाधारी तो यूँ आ जायेंगे**

▶ **मनसा सेवा के लिए मन भी बेहद में चाहिए, असीम में चाहिए, Unlimited में चाहिए.. छोटी-छोटी बातों में नहीं..**

▶ **बुद्धि को नीचे नहीं आने देना, बुद्धि की tendency है छोटी-छोटी बातों में नीचे आने की**

→ **मन को ऊपर रखना है, उसके लिए चाहिए शक्तिशाली विचार, भगवान के महावाक्यों का अध्ययन, उन्हीं में रमण करना, उन्हीं में चित्त को लगाये रखना**

- उसका level of consciousness बहुत ऊँचा है और सुनने वाले नीचे
- **बुद्धि के तल से समझ जायेंगे, परन्तु कौन से भाव उनमें छिपे हुए हैं, कौन सा अनुभव उन शब्दों से वो कराता है, वो नहीं समझा जा सकता जब तक उसकी जो स्थिति है, उसी स्थिति में हम स्थित नहीं हो जाते..**
- Speaker जहाँ है वहीँ audience का तल हो चेतना का
- **वो अव्यक्त है तो उसी अव्यक्त स्थिति में ही उसे सुना जा सकता है**
- अगर नहीं सुनेंगे तो वो वैसा नहीं समझ में आएगा

→ शक्तिशाली बनने के लिए शक्तिशाली महावाक्यों का अध्ययन, शक्तिशाली चिन्तन चाहिए

- नहीं तो mind यहाँ-वहां की बातों में, संसार के बातों में रह जाता है, फिर वो अन्दर नहीं जाना चाहता..

→ **शक्तिशाली महावाक्यों का संग्रह चाहिए**

- **"जैसे बाप इस ड्रामा को साक्षी होकर देखता है, तुम भी साक्षी होकर देखो, और बाप को यूज करो"**
- **"ये ड्रामा अनादि बना हुआ है, यहाँ पर किसी का कोई दोष नहीं"**
- **"यह साक्षी स्थिति बहुत ही मीठी स्थिति है"**

→ **शक्तिशाली मन के लिए मन को बेहद में रखना है, उसको नीचे नहीं आने देना है**

→ असीम में रखना है, इन बेहद महावाक्यों का अध्ययन करते रहना है

→ **मन में अपमान या अभिमान के कोई दाग ना हो**,

- अपमान का दाग यदि है तो महाभारत को खड़ा करता है

→ **मन past से मुक्त हो, अतीत जो है अन्धकार है, मन को बार-बार वहां लेकर नहीं जाना है, जो भी हुआ ड्रामानुसार हुआ, फुल स्टॉप.**

- कोई बीमारी आकर चली गई, पर अब तक भी उसका वर्णन करते रहना, या अभी कोई बीमारी है

- **बीमारी से मुक्त होने की विधि- अपनी बीमारी के बारे में ना ही वर्णन करना, लिखना, चिन्तन करना, ना लोगों को बताना**

- **Pretend that you are healthy**
- **ये दिखाना की मैं स्वस्थ हूँ, चाहे कुछ भी हो**
- **Mental Healing का First Principle है- Do not talk about your illness**
- **जैसे ही हम कहते हैं- I am not well- तो एक आदेश दे रहे हैं body को, लिख रहे हैं जैसे- मैं आज ठीक नहीं हूँ.. मन आदेश दे रहा है शरीर को और शरीर तुरंत स्वीकार कर लेता है**
- अमृतवेले उठते ही कहो आज थकान सी लग रही है, कमरे में ही बैठकर करेंगे, वहां जाने की क्या जरूरत तो शरीर कहेगा-जी हजूर
- **All diseases are invited guests.**

→ **मन को negativity से मुक्त करो, व्यर्थ से, दाग-धब्बे, पुराने संस्कारों से मुक्त करो**

→ अपनी बीमारियों के लिए स्वयं को जिम्मेवार समझना, मेरे ही संकल्पों से आमंत्रित यह बीमारी है..

→ बहुत सूक्ष्म बातें हैं जिन बातों ने मन को कमजोर किया है, शरीर को भी कमजोर कर दिया, कमजोर शरीर में शक्तिशाली मन नहीं रह सकता

→ **Fitness का चिन्तन करना ये body consciousness नहीं है क्योंकि ये शरीर साधन है इसी में बैठकर परमात्मा तक यात्रा करनी है.. इसी में बैठकर ब्राहमण जीवन का मजा लिया जा सकता है**

- शरीर ही यदि बीमार है तो ब्राहमण जीवन का मजा नहीं आ सकता

→ **शक्तिशाली मन के लिए शक्तिशाली, स्वस्थ देह भी चाहिए**

- **जिसकी भोजन, निद्रा संयमित है**
- ऐसा देह जिसको थोडा तपाया भी है
- भोग विलासिता में डूबा हुआ नहीं है

→ वर्तमान में जीना शक्तिशाली मन की निशानी है, पास्ट भी नहीं, भविष्य भी नहीं

➳ _ ➳ हमें शक्तिशाली बनना है और आत्माओं को शक्तिशाली बनाना है

→ वो हर संभव प्रयास करना है जिससे मन और शरीर शक्तिशाली बने

→ किसी से मदद लेनी है तो ले सकते हैं

➳ _ ➳ सकाश दो, वायब्रेशन फैलाओ, मुख से ज्ञान देना बंद नहीं करना है

→ किसी ना किसी तरह ज्ञान निकलते रहना चाहिए

- ज्ञान की चर्चा के लिए दो लोग भी काफी हैं
- **आत्माओं के पास ब्राहमण बनने के पहले और ब्राहमण बनने के बाद के बहुत सारे अनुभव हैं इसलिए आत्माओं के साथ बैठकर चर्चा करना**

➳ _ ➳ **स्वयं की खोज ये अध्यात्म है**

→ information, ज्ञान, wisdom, विवेक

- सूचनाओं से ज्ञान तक पहुंचना है, ज्ञान से wisdom, विज्ञान, विवेक तक पहुंचना है ये यात्रा है चेतना की